श्री सभापति : ये इकोनोमीकली बेकवर्ड का सब कह रहे हैं, आपने उसका तो जवाब दे ही दिया है।

डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी : यह मैंने कह ही दिया। ट्वेण्टी पाइंट प्रोग्राम के अंदर तो गरीबी की बात है . . . (**व्यवधान**) . . .

श्री वीरेन्द्र वर्मा : जो पूअरेस्ट हैं, उनके लिए कोई रिजर्वेशन कोटा है या नहीं ?

डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी : सभापति जी, जो बहुत ही गरीब हैं, उनके लिए ट्वेण्टी पाइंट प्रोग्राम है।

श्री सभापति : सर्विसेज के रिजर्वेशन का पूछ रहे हैं।

डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी : रिजर्वेशन का क्या सवाल है, इतने ज्यादा लोग गरीब हैं, जिस देश में। उत्तर प्रदेश में ही 50 परसेंट विलो पावरटी लाइन में हैं और किसी स्टेट में 46 परसेंट विलो पावरटी लाइन में हैं।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : इनको जवाब देना चाहिए "हां" या "ना" में . . . (**व्यवधान**) . . .

डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी : दो-तीन परसेंट से काम नहीं चलता क्योंकि सब के लिए देखना होगा, जितने भी गरीब हैं उनके लिए और गवर्नमेंट की पालिसी है, ट्वेण्टी पाइंट प्रोग्राम के अंतर्गत हम उनको पावरटी लाइन से अपर लाने का कर रहे हैं।

श्री सभापति : उनका सवाल इस पर नहीं है, उनका सवाल है रिजर्वेशन पर।

डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी : गरीबी के आधार पर कोई रिजर्वेशन कैसे किया जा सकता है। यह तो कांस्टीट्यूशन में इस तरह से है ही नहीं।

MR. CHAIRMAN: Next Question. Question No. 245.

*245. [*The questioner (Shri Suresh Kalmadi) was absent. For answer* vide *col.* 42-43 infra]

*246. [*Withdrawn*]

*247. [*The questioner (Shri Satya Prakash Malaviya) was absent. For answer* vide col. 44-45 infra]

*248. [*The questioners (Shri V. Gopalsamy and Shri T. R. Balu) were absent. For answer* vide col. 46-49 infra]

*249.[*The question (Shri Harvendra Singh Hanspal) was absent. For answer* vide col. 50-51 infra].

MR. CHAIRMAN: Question No. 250. Mr. Ahluwalia.

National Symposium on Plants Virus Problem

*250. SHRI S. S. AHLUWALIA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether National Symposium on plants virus problem in India was held recently at the Indian Agricultural Research Institute and if so, when;

(b) whether any concrete plan has been formulated to save crops from pest and diseases and if so, the details of the plans, crop-wise; and

(c) by when the above plan is going to be introduced and implemented by Government?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH AND EDUCATION IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI HARI KRISHNA SHASTRI): (a) to (c) A Statement is placed on the Table of the Sabha.

Statement

(a) Yes, Sir. The National Symposium on Plant virus Problems in India was held on 5-6 April, 1988 at Indian Agricultural Research Institute, New Delhi.

(b) The symposium has highlighted major virus diseases problems and has suggested steps for managing them. The Symposium was conducted in seven sessions, namely virus dis-

eases of grain legumes, oilseeds, spices, fruit, plantation crops. vegetables, ornamentals and special topics. In the plennery session, twelve recommendations were presented. Four recommendations pertain to identification of major virus desease problems and immediate steps for managing them. Next four recommendations relate to steps for strengthennig research work. The remaining recommendations concern the action plan for programme implementation.

(c) All the virology centres have been advised to undertake immediate steps for implementation of the Symposium rcommendations. The first training course would be organised in about four months. Preperations for organising the training course at the Advanced Centre for Plant Virology are already in progress.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कृषि मंत्री जी से यह पूछना चाहूंगा कि यह पौध विषाणु रोगों के बारे में जो राष्ट्रीय सिम्पोजियम हुआ था, उसमें 12 सिफारिशें की गई थी और उसमें सात सत्र जैसे--दाने वाली फलीदार फसलों, तिलहनों, मसालों, फलों, रोपण फसलों, सब्जियों, शोधकारी पोधों के बारे में विचार किया गया था । क्योंकि हमारे फाइव टेक्नोलोजी मिशन में भी तिलहनों के बारे में एक टक्नोलोजी मिशन है तो मैं पूछना चाहूंगा कि कितना एडीबल आयल पैदा किया जा सकता है, खास तौर पर तिलहनें अगर पौध विषाणु रोगों से ग्रसित होकर और खराब होंगी तो इसकी कमी के कारण क्या हमें इसका इम्पोर्ट और बढ़ाना पड़ेगा तो इसको रोकने के लिए क्या हमने कुछ पेस्टीसाइड आइडेंटीफाई किए हैं ? अगर किए हैं, तो वे कौन से हैं और कब तक उनका स्प्रे कर दिया जा सकेगा ?

कृषि मंत्री (श्री भजन लाल) : चेयरमैन साहब आप जानते हैं कि डिसीज बहुत सी फसलो पर लगती है और वायरस का जब ज्यादा प्रकोप होता है तो बहुत सी फसलों में डिसीज आ जाती है, उसकी रोकथाम करने के लिए समय-समय पर गोष्ठी होती है और गोष्ठी में सारे देश के वैज्ञानिक इकट्ठे होते है तथा विचार करते हैं कि देश के कौन से हिस्से में किस प्रकार की डिसीज है, उसकी रोकथाम कैसे की जा सकती है । उसकी रोकथाम करने के लिए भारत सरकार ने 12 जगह इसके केन्द्र बनाए हुए हैं, 26 देश में यूनिवर्सिटी हैं, हर यूनिवर्सिटी में इसका अनुसंधान किया जाता है, देखा जाता है, रिसर्च किया जाता है ।.. (व्यवधान)..

PROF. C. LAKSHMANNA: Sir, the question is about the package of technologies. But he is giving a discourse as if this is a seminar.

श्री भजन लाल : आप जब पूछेंगे तो बता देंगे आपको ।

प्रो० सी० लक्ष्मन्ना : मैं कह रहा हूं, यह तो प्रवचन बन गया...

श्री योगेन्द्र मकवाणा : जिसने पूछा है, उसका आप जवाब दे रहे हैं ।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया : प्रोफेसर की उपाधि वह किसी और को नहीं देना चाहते, अपने पास रखना चाहते हैं ...(व्यवधान)..

श्री भजन लाल : मेहरबानी करके क्वैश्चन आवर के बाद कर लेंगे यह बातें। तो अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे अर्ज कर रहा था कि बकायदा हमने 12 जगह सेंटर खोले हुए हैं और बीमारी की रोकथाम के लिए इसमें पूरे इंतजाम करते हैं कि बीमारी न लगे । डिपार्टमेंट देखता है इसको, हमारे पूसा इंस्टीट्यूट

में एक पूरा रिसर्च सेण्टर खोला गया है ; वहां एक-एक बात की गहराई में जाकर, उसकी तह में जाकर जानकारी देते हैं और सीड भी टेस्ट करते हैं ताकि ऐसा न हो कि सीड में कमी हो और बीमारी फिर से आ जाय । सरकार की तरफ से हमेशा पूरी कोशिश रहती है कि किसी प्रकार की बीमारी, इस देश में जो किसान अनाज पैदा करता है, सब्जी पैदा करता है, उनमें न लगे । सरकार की तरफ से भरसक कोशिश होती है और अगर माननीय सदस्य हमको यह बताएं कि फलां जगह ठीक इंतजाम नहीं हुआ, हमारे नोटिस में यह लाएं तो सरकार उस पर कार्यवाही करेगी ।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : सभापति महोदय, मंत्री महोदय ने कहा कि इन बीमारियों को देखने के लिए तरह-तरह के साइंटिफिक सेण्टर 12 जगह खोले गए हैं । तो मैं याद दिलाना चाहता हूं कि पिछले दो साल में हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में सेब की फसल को बहुत कीड़ा लगा था और अचानक हमें बहुत सारी दवाइयां बाहर से मंगानी पड़ी थीं, फिर भी हम उस फसल को नहीं बचा सके थे । मैं पूछना चाहूंगा कि बीमारी लगने पर अनुसंधान होता है या बीमारी के पहले ही होता है ? अगर बीमारी के पहले होता है तो एक स्पेसिफिक वायरस को रोकने के लिए जो अनुसंधान किया जाता है, उसमें कितना समय लगता है और आज तक कितने अनुसंधान ऐसे किए गए हैं ?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, बीमारी अचानक भी लग सकती है, खड़ी फसल को भी लग सकती है वायरस से और अगर एक पौधे को बीमारी लग जाय तो दूसरे पौधे पर फौरन असर चला जाता है । डिपार्टमेंट कहता है कि जिस पौधे को बीमारी लग जाती है, उसे बकायदा उखाड़ना चाहिए ताकि दूसरे पौधे को बीमारी न लगे और जब बीमारी ज्यादा फैल जाती है तो पूरा अनुसंधान करके और बकायदा टेस्ट करके कहते हैं किसान को, कि आपको यह बीज डालना चाहिए, यह बीज ठीक नहीं है इसको नहीं डालना चाहिए । बीज बकायदा टेस्ट करके किसान को बताते हैं और बीमारियों की रोकथाम कौन सी दवाइयों से हो सकती है, वह दवाइयां भी किसान को बताते है कि इसका स्प्रे करना चाहिए और उसका स्प्रे करके वायरस का इंतजाम किया जाता है ।

कुमारी सईदा खातून : माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहती हूं कि जो राष्ट्रीय सिम्पोजिम का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में 5–6 अप्रैल, 1988 को किया गया था, उसमें कितनी स्टेट के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया था और दूसरा क्वैश्चन मेरा यह है कि जो पौध विषाणु रोग से संबंधित अग्रिम केन्द्र में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करने की तैयारी का काम प्रगति पर है तो इसमें कितनी स्टेटस हैं और क्या मध्य प्रदेश में भी यह प्रशिक्षण केन्द्र खोले जा रहे हैं ? अगर खोले जा रहे हैं तो किन जगहों पर खोले जा रहे हैं ?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, इसमें 150 वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया यह जो 5 और 6 अप्रैल को गोष्ठी हुई थी और इस गोष्ठी में 26 यूनिवर्सिटी के नुमाइंदों ने भी हिस्सा लिया । मैं एकाध प्रदेश की तो बात नहीं कह सकता लेकिन तकरीबन सारे मुल्क के लोग इसमें आए और दो दिन तक एक-एक बात पर विचार हुआ, गहराई में गए कि इस किस्म की डिसीज जो लगती है, इनके वायरस को रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं । सब टेक्नीकल लोगों ने इस पर विचार किया । जहां तक आपने पूछा है यह 12 केन्द्र कौन सी जगह हैं, तो यह बहुत बड़ी संस्था पूसा इंस्टीट्यूट दिल्ली में है, एक बंगलौर में है, पूणे में है, हैदराबाद में है, लखनऊ में है, कोयम्बटूर में है, पश्चिमी बंगाल मे है, गोरखपुर उत्तरप्रदेश में है... (व्यवधान)...

कुमारी सईदा खातून : मैंने मध्य प्रदेश का पूछा है ?

श्री भजन लाल : मध्य प्रदेश के लिए यूनिवर्सिटी है, यूनिवर्सिटी में बकायदा अनुसंधान का कार्य चल रहा है । मध्य प्रदेश बहुत बड़ी स्टेट है, एरिए के हिसाब से देश में सबसे बड़ा प्रदेश है ।... ...(व्यवधान)...

श्री विट्ठलराव माधवराव जाधव : हर यूनिवर्सिटी में एक ऐसा केन्द्र होता है ।

श्री भजन लाल : हर यूनिवर्सिटी में होता है । मध्य प्रदेश में दो है । दोनों में हैं । यह नहीं है कि मध्यप्रदेश में नहीं है । लेकिन जहां बीमारी ज्यादा लगने की संभावना रहती है, वहां ज्यादा दी जा सकती हैं । परन्तु मध्यप्रदेश के लोग भी अच्छे है, वहां की जमीन भी अच्छी है इसलिए वहा बीमारी भी कुछ कम लगती है ।

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: Mr. Chairman, Sir, in Andhra Pradesh, specially in Guntur and Godavari districts, thousands of guava gardens are to be rooted out for wilt disease. And the Government of Andhra Pradesh wrote to the Centre many a time regarding the import of three pesticides by name Danital, Lannate and Trisophos. Time and again, I mentioned the same in this House and so far we got no reply. Sir, I would like to point out to the hon. Minister that on 27th April, I made a Special Mention regarding this problem in this House and I am sorry to say that for the last three months the hon. Minister did not find time to answer that. Sir, this does not involve any financial commitment to import those pesticides. And for want of these pesticides, several crops are being attacked by pests like white flies and what not. As regards the allotment of funds by the ICAR for various Agricultural Universities in the country, it is being distributed at pro rata basis. In that situation, the State of Andhra Pradesh with a wide agricultural area geographically is getting less share out of it because it is having only one Agricultural University whereas several other States like Maharashtra, because they are having several Agricultural Universities, are getting more funds from the ICAR. Is there any proposal to redress this injustice, I would like to ask.

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, इन्होंने कहा कि बीमारी अमरूद पर ज्यादा लगती है । अकेले अमरूद की बात नहीं है । आलू पर, केले पर, दालों पर...

श्री सभापति : यह गुंटूर की बात कर रहे हैं ।

श्री भजन लाल : और मूंग पर भी लगती है । जहां इन्होंने कहा कि तम्बाकू पर भी लगती है । आप के एरिये में तम्बाकू ज्यादा होती है । बीमारी कोठले को भी लगती है, वह भी आंध्र प्रदेश में ज्यादा होती है । दूसरे मैंने अभी कहा एक सेंटर हैदराबाद में भी है । हैदराबाद एग्रीकल्चर के हिसाब से देश में दिल्ली के बाद सबसे ज्यादा संस्थाएं रखता है, आंध्र प्रदेश में सबसे ज्यादा है इसलिए मैं समझता हूं इनका यह कहना मुनासिब नहीं है । अगर आप वहां जाकर देखें तो आपको मिनी दिल्ली नजर आएगी । हैदराबाद में, आंध्र प्रदेश में एग्रीकल्चर के हिसाब से 13 संस्थाएं हैं हमारी । वहां पर राइस सेंटर हैं और भी कई सेंटर्ज है अगर बीमारी बढ़ गयी हो तो मैं नहीं कह सकता । फिर भी हम कोशिश करेंगे कि आप को किसी प्रकार की शिकायत न रहे और आपकी बीमारी को दूर किया जाय । वैसे मैं राजनीतिक बीमारी का जिक्र नहीं कर रहा हूं, अगर किसी फसल को, किसी फल को और किसी सब्जी को बीमारी है तो उसे दूर करने की कोशिश की जाएगी ।

DR YELAMANCHILI SIVAJI: Sir, the Minister has not answered my question about the import of these three pesticides. He is talking of this and that. Another thing about the institutions at Hyderabad, ICRISAT is

maintained by an international organisation and not by the Central Government.

MR. CHAIRMAN: You asked whether he will look after your Guntur. He said that he would.

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: What about the import of those pesticides? It would not involve any monetary aspect.

श्री भजन लाल: सभापति महोदय, मैं इनके बारे में भी कहना चाहता हूं कि किसी प्रकार की भी, एक सैकिण्ड, ...(**व्यवधान**)...मैं स्लिप कर गया था, सुनिए, सुनिए..

श्री प्रमोद महाजन: सभापति जी, बीज अलग बोया जा रहा है, फसल अलग काटी जा रही है। व पूछ रहे हैं कि ...(**व्यवधान**)...

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: Sir, my hon. friend is well aware and and when the virus attack takes place. He knows the answer but he just wants to politicise it.

श्री भजन लाल: सभापति महोदय, जहां तक सवाल है इसकी दवाइयां बाहर से मंगाने का, बाहर से मंगाने की जरूरत होती है तो बाहर से मंगाते हैं लेकिन इस समय देश में इस बीमारी की रोकथाम करने के लिए दवाई की कोई कमी नहीं है। जितनी दवाइयां चाहिएं उससे फालतू हमारे पास हैं।

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: On a point of order, Sir, the Minister is misleading the House. These three pesticides are not available in the country.

ठाकुर जगतपाल सिंह: सर, क्वेश्चन आवर में तो प्वाइंट आफ आर्डर ये कर ही नहीं सकते हैं।

How can he rise on a point of order during the Question Hour?

श्री बीर भद्र प्रताप सिंह: मैं अपने देश के कृषि वैज्ञानिकों को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि वे बीज के अंदर ही ऐसी तकनीक पैदा कर रहे हैं कि वे रोग से लड़ सकें लेकिन ऐसे बीज बहुत कम हैं। प्रश्न यह है कि छिड़काव की दवाओं का क्या होगा। अब सरकारी संस्थान केवल एक है इंडो नें और पूरी छिड़काव की दवाएं व्यक्तिगत हाथों में हैं जो बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के साथ मिलकर दवाएं बनाते हैं और बड़े मंहगे दामों पर बेच रहे है। मैं मंत्री जी से तीन सवाल ए, बी, सी करना चाहता हूं कि ये दवाएं जो व्यक्तिगत लोगों द्वारा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के सहयोग से बन रही हैं ये असली हैं कि मिलावटी है कि नकली हैं, इस पर आप क्या कर रहे हैं? दूसरा, बी, इन दवाओं का दाम इतना ऊंचा कैसे है। तीसरे,...

श्री सभापति: तीसरा नहीं, सी, स,-अ, ब, स।

श्री बीर भद्र प्रताप सिंह: इस लिये महत्वपूर्ण है कि अगर मैं अपने खेत में दवा छिड़कना चाहूं तो मुझे दिल्ली में भी कभी-कभी दवाएं उपलब्ध नहीं होती हैं। तो उसकी उपलब्धता के प्रश्न पर, क्योंकि आप बनते नहीं आप बेचते नहीं, तो उसकी उपलब्धता के बारे में गंभीरतापूर्वक क्या विचार करके ऐसा प्रबंध करेंगे कि ये दवाएं किसान को उसके खेत के करीब मिलें। वह दिल्ली, लखनऊ और बंगलौर नहीं जाएगा।

श्री भजन लाल: सभापति महोदय, एक बात इन्होंने खुद ही कही, इस बात के लिए मैं इनका धन्यवाद करता हूं कि हमारे देश के वैज्ञानिकों ने बहुत अच्छे बीज तैयार करने की कोशिश की है ताकि बीमारी का प्रकोप कम से कम उस पर लगे। जब फसल मजबूत होगी जैसे कोई भी आदमी अगर मजबूत आदमी है, उसकी सेहत अच्छी है तो उसको बीमारी कम लगती है, कमजोर आदमी को तो थोड़ी सी हवा भी लग जाए तो उसको बुखार हो जाता है। लेकिन मैं यह इनके बारे में नहीं कह रहा हूं जिन्होंने सवाल पूछा है। अटल

जी आप यह मत समझना कि मैं आपके बारे में कह रहा हूं... (व्यवधान)... । जहां तक सवाल है कि दवाएं प्राइवेट लोग बनाते हैं तो इसमें कोई दो राय नहीं है। सरकार इतनी दवाएं बना नहीं सकती। लेकिन दवाएं यदि प्राइवेट लोग बनाते है और वे बेचते है आगे तो बाकायदा उसकी चैकिंग होती है, उसका सैम्पल भरा जाता है और अगर दवाई में कोई त्रुटि नजर आती है तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाती है, केस बनाया जाता है और बाकायदा कानून में ऐसी व्यवस्था है कि अगर कोई मिलावट में पकड़ा जाए तो उसको पांच साल तक कैद की सजा है मिलावट में। जहा तक दवाओं के भाव का ताल्लुक है कि भाव ऊंचा है, सभापति महोदय, बाकायदा कम्पीटिशन होता है। बहुत सी कम्पनिया दवाएं बनाती है। एक कोई फर्म बनाए तो ऐसा हो सकता है लेकिन बहुत कम्पनियां बनाती हैं तो भाव ऊंचे का सवाल पैदा नहीं हो सकता, थोड़ी-बहुत जरूर क्योंकि आप जानते हैं कि अगर बाकी चीजें मंहगी मिलती तो जरूर कुछ मंहगी होगी लेकिन फिर भी हमारी कोशिश यह होती है कि मुनासिब भाव में किसान को दवाएं मिलें। इन्होंने कहा कि दवाई कुछ कम मिलती है, कई जगह मिलती नहीं है सरकार की भी कोशिश रहती है कि सभी जगह दवाइयां मिलें, खाद मिले, बीज मिले और जितनी भी किसान की जरूरत की चीजें हैं वे मिलें ताकि किसान को किसी प्रकार की दिक्कत न हो।

SHRI ARANGIL SREEDHARAN: Hon. Chairman, a dangerous kind of virus is causing havoc to coconut trees in Kerala. Thousands and thousands of acres of coconut plantations are affected by it. Sir, coconut is the backbone of our economy and if the coconut trees die, our people will be driven to starvation with dire economic consequences. Different State Governments of different political complexions have made representations to the Government of India to devise means to meet this crisis; but nothing has been done so far in this regard. I would like to know from the hon. Minister as to what steps the Government have taken so far to eradicate this virus infection. What concrete steps have been taken in this regard?

श्री भजन लाल: सभापति महोदय, मैंने अभी तफसील में बता दिया था कि बाकायदा पूरी रिसर्च होती है, पूरी गहराई में जाकर इसको देखा जाता है कि कैसे इसको रोका जा सकता है।

श्री सभापति: इनका सवाल नारियल से संबंधित है, नारियल के वाइरस का सवाल है।

श्री भजन लाल: सभापति महोदय, नारियल का हो या दूसरा कोई पेड़ हो, अकेले नारियल की बात नहीं है, बीमारी दूसरे पेड़ों की भी लग सकती है। लेकिन जहां तक सरकार के ध्यान में यह बात लाई गई है, हमारे वैज्ञानिकों ने इसको देखा है और उसका इलाज भी करने के लिए दवाई बताई है।

SHRI ARANGIL SREEDHARAN: If the Minister does not know the answer, let him find out and tell me. He seems to be totally ignorant of our problem. He is only beating about the bush.... (Interruptions).

श्री भजन लाल: सभापति महोदय, मैं एक ही बात कह सकता हूं कि पेड़ बञ्ज हो जाता है तो उसका तरीका यह है कि उसको उखाड़ना चाहिए, नहीं तो दूसरे पेड़ों को भी बीमारी लग जाएगी। उस पेड़ का इलाज हो उसके लिए सरकार बंदोबस्त करती है। नारियल का पेड़ उखाड़ने पर उस किसान की सहायता भी करती है।